

साहित्य

जीवन से विदा लेती

ध्वनि

कहानी

■ उमाकांत मालवीय

बाबू जी धीरे चलना... प्यार में जब संभलना...!' वह जिस शब्द के पीछे सड़क पर चल रहा था उसके खेल फानों में उस वक्त वह फिट्फिट गीत बच रहा था। यूँ तो इस धुन को उसने पहले भी सुना रखा था पर इसे उस शब्द के पीछे चलते हुए उस वक्त सुनना न जाने क्यों आज उसे अच्छा लगाने लगा। उसे हमेशा लगता कि हर चीज की एक निवृत्त जगह होती है दुनियाँ में, और उस निवृत्त जगह पर उस चीज की खूबसूरती अपने आधा बढ़ जाती है। सुबह का वह समय रागवद की गजगार फाड़ी के नीचे घूमती हुई चिकनी सड़कों पर चलते हुए यूँ भी किन्तना खूबसूरत हो जाता क्या करता है। इस समय में इस धुन को सुनते हुए लगा उसे कि कुछ चीजें अपनी जगह अपने आप डूब लेती हैं। अगर हम उन्हें उनकी सही जगहों पर पा सकें तो किन्तना सुकून मिलता है। इस फिक्रगी धुन को सुनना की खातिर ही उसने आगे जा रहे उस शब्द के कदमों की रफ्तार के साथ अपने कदमों की रफ्तार को संतुलित करने का भरपूर प्रयास किया। कदमों को संतुलित करने की कोशिश में उसने धुन से जिरह करना शुरू कर दिया। 'एडजेस्टमेंट करना तो कोई तुम्हारे सोखे सियो।' 'फिर ने एक बार उससे सीरियस होकर कहा था। उसका एडजेस्टमेंट शब्द पर इतना जोर था कि वह समझ नहीं पा रहा था कि आखिर वह कलना क्या चाहती है? उसने फिर से जिरह करना मुनासिब नहीं समझा कि आखिर उसे इस शब्द से आनित क्यों है। इस तरह निरह न करना भी उसकी परसिद्धि के मुताबिक एक किस्म का एडजेस्टमेंट ही था। एक बार सामान्य सी बातचीत के दौरान उसने उससे पूछा था - क्रमिकता का राला कलिन क्या होता है निवा? इतना कलिन कि हम हर जगह एडजेस्टमेंट करने की मजबूरी हो जाती है। एक ही राला बतवा है हमारे पास, दुनियाँ में अपने कदमों की गतिशील खरना है तो खुद को भीतर से

बदल डालो। उसकी बातें सुनकर अनागत निवा को चेहरा एक किताब की शकल का होने लगा था। एक ऐसी किताब जिसमें जीवन में निरह कटोरे अनुभवों की कहानियाँ पढ़ी जा सकें। 'मैं अपने नहीं मानती सियो। हर जगह एडजेस्टमेंट करने सके लिए संभव नहीं होते लिए तो बिल्कुल भी नहीं। इस तरह तो मुझे कभी मुक्ति नहीं चाहिए। चलो मान लिए कि बदलवान जीवन जीने की एक कला है। इसा और दुनियाँ की रेशों से एडजेस्टमेंट का एक हार। यह सोचकर हम दूसरों के अनुसूच अपने को भीतर से हर कलत संपादित करते रहते हैं, पर यह तो अपने आपसे थोड़ा हुआ सिखा। आखिर कब तक हम सेल्फ एडिजेंटिंग का शिकार होते रहें? कब तक अपने को धोखे में रखें? दुनियाँ को खुश रखने के लिए सेल्फ एडिजेंटिंग का बोधा आखिर क्यों क्यों होए सियो? और इस एडजेस्टमेंट शब्द को लेकर उनमें अत्यंत मतभेद हो जाता करते थे। वह उस वक्त सोचता रहा... क्या एडजेस्टमेंट की भी अपनी कोई खूबसूरत और रचनात्मक जगह होती है? शादत होने जो, शादत नहीं भी! पर अब तक उसने जो देखा समझा था, उससे तो यही जुदा जगह कि एडजेस्टमेंट की कोई सुन्दर जगह नहीं होती। आदमी अनिच्छ से, लालच से या मजबूरी में एडजेस्टमेंट करता रहता है। जीवन भर। उसकी तरह। नौकरी की खातिर। नौकरी बनने के लिए। उसे लगता है प्रादेव संस्थान में काम करते हुए जब एडजेस्टमेंट न करे तो उसकी नौकरी की भी चली जाए। सता के सूर में सूर न मिलाने की वजह से कई मॉडिअर कर्मियों को उनके मालिक नौकरी

से निकाल चुके थे। यह सब आज भी वह अपनी नौ औँतों से देख रहा है। यह सोचकर ही उससे भीतर डर की एक विडिआ आकर बैठ गयी थी। सामने चल रहा शब्द अपने ही धुन में चला जा रहा था। रालिंदों का मौरसम था। पूना के स्पेडरिड यूँ उस शब्द के पलों के फिटनेस को जब तक दुरुक्त किन्ते हुए थे वहीं उसने अपनी देह पर एक रफमनी को शल ओपन था था। जोड़ें उससे ऊपर किन्तना तो बच रहती थी। उसे फिर से समझना हुआ कि हर चीज का अपनी सही जगहों पर होना भी किन्तना जरूरी है। दुनियाँ कलर का शात ओइ इस ब्यक्ति के पीछे पीछे चलना आज उसे दोहरा सुकून दे गया था। 'सुकून भी किन्तना दुलिन हो गया है जीवन में।' 'सुकून मिलने के इस दुलिन अनुभव न चलते चलते उसके मन को इस एहसास से भर भी दिया था। फ्रबेड शहर जैव कलरों की तरह होते हैं। ये हमें तुलाने हैं, चकित करते हैं और चुपके से हमारा जेब काटते हैं। एक बाजू में चल रहे एक केवराई आदमी को एक दूसरे कवराई आदमी से यह कहते हुए उसने जुग जो तो उसके शब्दों से वह थोड़ा अचभिमता सा हुआ। चलते चलते वह सोचने लगा... लोगों के पास न जाने किस-किस तरह के अनुभव होते हैं जिससे वे किन्तनी खूबसूरती को देख कर साक्षा भी कर लेते हैं। साक्षा करने की बात को लेकर उसके भीतर बहुत सी बातें फिर से आने जाने लगीं। वह सोचने लगा... बातों का साक्षापन भी जीवन की कई छोटी छोटी कहानियों को अपने साथ लेकर चलता है। वह अपने भीतर भी कुछ टटोलने लगा। शादत कोई कहानी हो जिसे वह किसी

शादत होती हो, शादत नहीं भी! पर अब तक उसने जो देखा समझा था, उससे तो यही लगा था उसे कि एडजेस्टमेंट की कोई सुन्दर जगह नहीं होती। आदमी अनिच्छ से, लालच से या मजबूरी में एडजेस्टमेंट करता रहता है। जीवन भर। उसकी तरह। नौकरी की खातिर। नौकरी बनाने के लिए।

सो सके। जीवन को सारी कहानियाँ समाझीतों में लिखकू डूई मिलिाँ उसे। उसके मनेनर का आदेश उसे याद आने लगा - फ्रवत बात गाँव बिलारु रल को कि सता के फिट्फड को डिट्पणी कही भी नहीं करनी किसी को। सता कुमगीा हो जात तब भी उसकी ही में ही मिलना, उससा सपोट करताना निहात ऊकरी है हमारे लिए। सवने किन्तनी बेवसाी से उस दिन ही में ही मिलना था। उसके याद किन्ते तरह उसके साथी और वह खुद भी सोशल मीडिया में सता के पक्ष में मालुब बनाने के लिए डील आर की भूमिका में आ गए थे। यह सब कहानी वह किसे सुनाए? किस तरह साक्षा करे किसी से? सुनने ही लोग यू करतें लगेते उस पर। अचानक उसे लगा कि उसका कुमर नर चुका है। एक गालीबाजु की, एक कलाकारों की भी वह अब नहीं डहराने लगा है। उसके पक्ष में तक देने वाला है। सोचकर अनागत लगा उसे, जैसे उसने अपने बचद को ही किसी सतह पर लाकर टिका दिया है। कुछ समय के लिए उसे अपने आप से फिअ सी आने के लिए। असलाम में सुख निकल चुका था। सक्को आने-आने चलने वाला शखुस आने अपने गुलनल को जा चुका था। उसके जाते के साथ साथ 'बिदा ले ले' गीतना, प्यार में जा संभलना... 'वाले जी की खरिा भी उससे खिलू ले चुकी थी। उस वक्त उसके मन में कुछ इश तर के भाव आ-जा रहे थे। उसने लाने लगा जैसे अनागत उसके जीवन में किसी खनि का इतकाल हो चुका है।

गुजल
■ इन-ए-इशा

दिल डिज के दर्द से बोझल है अब आन मिलो तो बेहतर हो

इस बात से हम को क्या मतलब है कैसे हो ये क्यूँकर हो

इक भीक के दोनों कासे हैं इक प्यास के दोनों प्यासे हैं

हम खेती हैं तुम बालु हो हम नदियाँ हैं तुम सागर हो

ये दिल्त है कि जलते सीने में इक दर्द का फोड़ा अब्खूडू इस

ना गुम रहे ना फूट बड़े कोई मरहम हो कोई निरतार हो

हम सौझ समय की छाया हैं तुम चढ़ती रात के चन्द्रमा

हम जाते हैं तुम आते हो फिर मेल की सूत क्यूँकर हो

अब हूज का रक्वा 'आलो है अब हूज से सररा खाली है

चल बरसी में बंजारा बन चल नगरी में सौदगर हो

जिस चीज से तुझ को निरवत है जिस चीज को तुझ को चाहत है

वो सोना है वो होरा है वो माटी हो या कंकर हो

अब 'इंशा'-जी को बूतना क्या अब प्यार के दीप जलना क्या

जब धूप और छाया एक से हो जवन दिन और रात बनार हो

वो रातें चंद के साथ गई वो बातें चंद के साथ आईं

अब सुख के सपने क्या देखें जब दुख का सूख सके फल

पुस्तक समीक्षा

रोचक किस्मों का दस्तावेज

■ रोहित कौशिक

दुनियाँ के किस्से यदि संपन्न रूप से लिखे जाते तो ये सिर्फ किस्से बन कर रह जाते हैं। जाहिर है सारदापत्रिका ने हर रचनाकारता नहीं होती जिससे माध्यम से कोसे भी कथा हमारे सुनि का हिस्सा बन पाती है। प्रतिनिधित्व तथा लेखक विविध शर्मा ने हाता हो में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'तुम जिन्दगी का नमक हो' में विविध की छोटी-छोटी कहानियाँ संपन्न अंदाज में लिखी हैं। विविध शर्मा के गवा का लालिय इन कहानियों को और भी प्रभावी बनाते हैं। ये किस्से छोटे-छोटे अक्षर हैं लेकिन इन छोटे-छोटे अक्षरों में बड़ा दर्शन लिखा हुआ है। इन कहानियों का मूल रस नहीं है। अक्षर हम बहुत ही सीमित और परंपरगत दर्शन में प्रेम का अर्थ समझते हैं। इन कहानियों में प्रेम के विभिन्न स्वरूप महसूस किए जा सकते हैं। जिन्दगी से प्रेम किए बिना हम विवेक से भी प्रेम नहीं कर सकते। इसलिए प्रेम एक तरह विवेक से भरपूर प्रेम है। तो दूसरी तरफ प्रेम और प्रेमिका के बीच इशक की प्रकथा भी है। जाहिर है कि शादत से भरपूर प्रेम जो विवेक से जुड़े विवेक विवेकविधि से प्रेम न किस्से रूप से हमारे ऊपर अपना प्रभाव डालेगी। इसलिए इन कहानियों में कहीं न कहीं विवेक की विवेकविधि भी मौजूद है।

इन किस्मों की पहले हुए महसूस होता है कि इनमें सिर्फ कौनों किन्तनी हैं बल्कि फारस रूप से लेखक को किन्तनी के अन्तर्भू भी मौजूद है। जीवनभर से निकले किस्से जिन्दगी के किन्तना करण तो होते ही हैं, निरवतनी भी होते हैं। निरवत करण से किसी भी कथा में कल्पनाशीलता का अपना महत्व होता है लेकिन यदि कल्पनाशीलता जीवनभर पर आधारित हो तो वह ज्यादा ताकिने होती है। यही कारण है कि इन किस्मों की पहले हुए एक आनाथ जुड़वा बहिन हुआ है। ज्यों-ज्यों इन किस्सों से इन कहानियों को पहले हुए ओके बहने हैं, त्यौं-त्यौं इन किस्सों से हमारे सामनाकथा बढती जाती है। इस दौर में जबकि बौद्धिक बर्न बहने के बावों में उरला अतिरवत का शिकार हो रहा है, ये कथाएँ एक बर्नाई लोके तोहरी हुई अंधे में लैग पोस्ट की तरह हमें प्रकाशित करती हैं।

यहां कई शहर हैं, शहर की गलियाँ हैं, गांव हैं, चांद-गोर हैं, पहाड़ हैं, प्रकृति के विभिन्न रूप हैं तथा कई लेखक और लेखिका हैं। यानी एक मुख्यमन विवेकियों की कई विवेकियों हुई खरवीं हैं। इन विवेकियों हुई खरवीं से हो विवेकियों को एक बड़ी तस्वीर जुड़गी है और पूरा होती है। दरअसल विवेकियों हमेशा जुड़ती नहीं होती हैं। किसी एक रूप से गीरी विवेकियों वास्तविकता से बहुत दूर होती हैं। इसलिए कन कहानियों में परंपरागत और विवेकियों का रूप भी है। यह संपन्न कई तरंगों पर टिफाई देता है। प्रेम के सपने पर चलते हुए किस्से में हों तो प्रेम प्रेम का क्या अर्थित्व है? कभी वह संपन्न हमारे प्रेम को और मजबूती प्रदान करता है तो कभी हलात को कल्पतुती अक्षर हमारे प्रेम को कमजोर भी कर देता है। यह सव इत बात पर निभर करता है कि संपन्न के समय हमारा दुस्किण्य क्या है? ये कथाएँ विभिन्न परिस्थितियों में कहीं न कहीं हमारे दुस्किण्य को भी परिलक्षित करती हैं।

इन किस्मों में स्थानीय जीवन को हलचल है तो अन्तरराष्ट्रीय विवेकियों भी हैं। यह सही है कि रोमरग की स्थानीय गतिविधियाँ हमारे विवेकियों का अक्षर हैं। तो अन्तरराष्ट्रीय गतिविधियाँ भी किसी न किसी रूप में स्थानीय गतिविधियों पर अपना प्रभाव डालती हैं। निरवत रूप से इस प्रभाव को एक संवेदीरवत लेखक ही अपनी रचनाओं में दर्ज कर सकता है। इस बदलाव और प्रभाव को विवेक लेखक अलग-अलग तरीकों से दर्ज करते हैं। असली सवाल यह है कि क्या लेखक इन बदलावों में स्थानीय तरीके से अपनी रचनाओं में दर्ज कर पाया है? बड़ी बात यह है कि विविध शर्मा इन बदलावों को बहुत ही सलीके से इन किस्मों में दर्ज करते हैं। एक ऐसा भी अजीब समय हम देखते देखे कि जब 'पाँचदिन केबद हमारे लिए कल की घंटी बज गया था। यदि फिलेले कुल समय के किस्से लिखे जाएँ और उन किस्मों में हमारी विवेकियों को बदलने के बानी हममारी का फिक्र न हो तो कि निरवत रूप से वह स्थानिकता बनी होगी। हममारी किस्मों इस किस्म को संपादित करते हैं। जीवितता और रोचकता से आगे-प्रोत इन किस्मों की निरवत रूप से सव जना विवेकियों, इन अक्षर किस्मों को लिखने के लिए विविध शर्मा बर्नाई के पात्र हैं।



पुस्तक : तुम जिन्दगी का नमक हो लेखक : विविध शर्मा प्रकाशक : पुस्तकानामा, गाजियाबाद मूल्य : 120 रुपये

'कलयुग'

■ अजय चंद्रवती

हमारा को क्या विचारित होते गण समाजों और किन्तनी को पारसता के दीर की कहानी है। यह अपने विशाल दर्शन के लिए भी चर्चित रहा है। इसी विवेक तरहे से सता को केंद्रितता है और 'मिडिका' को द्वितीयक दर्जा दिया गया है वह बाद के सतानी समाजों में सता से अन्तर्निहित रूप दर्शन यह है। महाभारत में यह प्रकट रूप से हमें सता प्रलित के लिए नैतिकता-अनिताका का मापदंड खडा सा हो गया है, सतु के हिसरे और वास्तविक समस्य बेवसाी हो गये हैं। एक तरह से बहा आधुनिक पुँजीवाद समाजों का सामाजिक समस्यनों की पूँव पीठिका सा है। यह अकारण नहीं पौराणिक कालत निभाता में महाभारत(भारत) के बाद ही 'कलयुग' का आगमन होता है। कलयुग (कलयुग) शब्द से ही एक नकारात्मकता का बोध प्रकट किया जाता रहा है यानी यह युग नहीं सुखयोगी हो गया है बल्कि इसे 'सतयुग' के विपरीत देखा जाता है। सतयुग में सता न कहीं न कहीं 'अथ' या कहीं कलयुग में अधिकतर सता कलत(कल)युग का शाब्दिक अर्थ 'मानीय युग' भी होता है। शासक 'दुन्दवी-सोलवली' शासदों के प्यारिकता के दिर में सतानी मूय्यों के एक हद तक विपरीत न कलयुग की अउपस्थता को बव दिवत, ब्योकी लेने सपय से चले आ रहे सतानी मूय्यों का विखारक कलत के समान था जिसेको एक प्रातिनियक कलयुग के रूप प्रकट हुआ।

उसके दोनो चेहों खुबसूरत और सूरचवं को पारस-पुनर बनु किना खुबसूरत के चेहों पारस और सौन्दरताय को पूनरचंद के चेहों पारसना, बलवत और भवसाय के बोध अनागत सतानी खरती है। फिल्ल में महाभारत की तरह एक निरवत पात्र 'रारत' भी हो उसे अग्रथ हो और जिसेको भीमभन्द ने परबविका करी है, वह धरागज को कारोबारा में सयोग करती है और बहा अरमन अरमन समस्य हैं। पारस फल भी आखिरकार वह पाँचवाँक सतयुग है। भवराज और काविक भवत भी उसकी सीमाएँ हैं। भवराज और काविक भवत में कुछ इश तर के भाव आ-जा रहे थे। उसने लाने लगा जैसे अनागत उसके जीवन में किसी खनि का इतकाल हो चुका है।

कलयुग कलयुग शब्द से ही एक नकारात्मकता का बोध प्रकट किया जाता रहा है यानी यह युग नहीं सुखयोगी हो गया है बल्कि इसे 'सतयुग' के विपरीत देखा जाता है। सतयुग में सता न कहीं न कहीं 'अथ' या कहीं कलयुग में अधिकतर सता कलत(कल)युग का शाब्दिक अर्थ 'मानीय युग' भी होता है। शासक 'दुन्दवी-सोलवली' शासदों के प्यारिकता के दिर में सतानी मूय्यों के एक हद तक विपरीत न कलयुग की अउपस्थता को बव दिवत, ब्योकी लेने सपय से चले आ रहे सतानी मूय्यों का विखारक कलत के समान था जिसेको एक प्रातिनियक कलयुग के रूप प्रकट हुआ।



करोती है, और काय दंड से मुक्त होकर सहयोग करने का प्रयास भी करता है मगर हालात हाथ से फिसलते रह जाते हैं। 'सतयुग' का चरित्र द्वैतपूर्ण था है, परसत में निभयों में एक हद तक हलसवत है। पति से एक समय के बाद अन्तर्पारिक दुस्मि से है। आखिर किन्तनी से निकलता बहने रहने के लिए सतयुग अचरित पारसता का महाभारत है। सतानी-पुँजीवादी मूय्यों से संसकतित परसतार में बूटी पारसता और संसह के करती महसवत हो उरने ही इर है। हतका मिशाना-बुलना, इकठु सोना सव याँकत है, अरत करती फुकरत और प्रतिसंधी है। यह भारी-भारी, निभ-पची सब जैसे किस्से औपचारिकता का पवित्र चक्र रहे हैं। रिसाँ में गुमराह कहीं नहीं है। फिक्र का निर्देसन, चलत कथाकार संपादितता, आधिपत्य सतानी महत्सवणी हैं। पात्रों के दर्शन, परिस्थितियों की विवेकनायक और बेवसी के बेहतर आने उरमा गया है। भवराज का साहलना से पहले आने छोटी बचपी से पोषण सुनने का इतुभ मतारारण एक इशके में मायम में चलत जना इतुभ करता है। इस तरह और भी छोटी-छोटी पत्राएँ हैं जो यादिक निर्देसन को प्रकट करती हैं। पात्रों की संख्या अचिक होने के कारण मुनाकरा संसित पात्र महत्सवणी हैं। महाभारत अपने विदारत और थायवादाँ विवेक के कारण हर दौर के कलाकारों को प्रभाविता करता रहा है और आगे भी कथार्थ

फिल्म 'कलयुग'

कलयुग कलयुग शब्द से ही एक नकारात्मकता का बोध प्रकट किया जाता रहा है यानी यह युग नहीं सुखयोगी हो गया है बल्कि इसे 'सतयुग' के विपरीत देखा जाता है। सतयुग में सता न कहीं न कहीं 'अथ' या कहीं कलयुग में अधिकतर सता कलत(कल)युग का शाब्दिक अर्थ 'मानीय युग' भी होता है। शासक 'दुन्दवी-सोलवली' शासदों के प्यारिकता के दिर में सतानी मूय्यों के एक हद तक विपरीत न कलयुग की अउपस्थता को बव दिवत, ब्योकी लेने सपय से चले आ रहे सतानी मूय्यों का विखारक कलत के समान था जिसेको एक प्रातिनियक कलयुग के रूप प्रकट हुआ।

जीवन से विदा लेती

ध्वनि

कहानी

रमेश शर्मा

बाबू जी धीरे चलना... प्यार में जरा संभलना....!' वह जिस शख्स के पीछे सड़क पर चल रहा था उसके सेल फोन में उस वक्त यह फिल्मी गीत बज रहा था। यूं तो इस धुन को उसने पहले भी सुन रखा था पर इसे उस शख्स के पीछे चलते हुए उस वक्त सुनना न जाने क्यों आज उसे अच्छा लगने लगा। उसे हमेशा लगता कि हर चीज की एक नियत जगह होती है दुनिया में, और उस नियत जगह पर उस चीज की खूबसूरती अपने आप बढ़ जाती है। सुबह का यह समय रायगढ़ की गजमार पहाड़ी के नीचे घूमती हुई चिकनी सड़कों पर चलते हुए यूं भी कितना खूबसूरत हो जाता करता है। इस समय में इस धुन को सुनते हुए लगा उसे कि कुछ चीजें अपनी जगह अपने आप ढूँढ लेती हैं। अगर हम उन्हें उनकी सही जगहों पर पा सकें तो कितना सुकून मिलता है। इस फिल्मी धुन को सुनने की खातिर ही उसने आगे जा रहे उस शख्स के कदमों की रफ्तार के साथ अपने कदमों की रफ्तार को संयोजित करने का भरपूर प्रयास किया। कदमों को संयोजित करने की कोशिश में उसे बहुत सी बातें याद आने लगीं।

'एडजेस्टमेंट करना तो कोई तुमसे सीखे सियो!' निया ने एक बार उससे सीरियस होकर कहा था। उसका एडजेस्टमेंट शब्द पर इतना जोर था कि वह समझ नहीं पा रहा था कि आखिर वह कहना क्या चाहती है? उसने निया से जिरह करना मुनासिब नहीं समझा कि आखिर उसे इस शब्द से आपत्ति क्यों है। इस तरह जिरह न करना भी उसकी परिस्थिति के मुताबिक एक किस्म का एडजेस्टमेंट ही था।

एक बार सामान्य सी बातचीत के दौरान उसने उससे पूछा था - प्रमुक्ति का रास्ता कठिन क्यों होता है निया? इतना कठिन कि हम हर जगह एडजेस्टमेंट करने को मजबूर हो जाते हैं। एक ही रास्ता बचता है हमारे पास, दुनिया में अपने कदमों को गतिशील रखना है तो

खुद को भीतर से बदल डालो। उसकी बातें सुनकर अचानक निया का चेहरा एक किताब की शकल का होने लगा था। एक ऐसी किताब जिसमें जीवन में मिले कठोर अनुभवों की कहानियां पढ़ी जा सकें। 'मैं ऐसा नहीं मानती सियो! हर जगह एडजेस्टमेंट करना सबके लिए संभव नहीं मेरे लिए तो बिल्कुल भी नहीं। इस तरह तो मुझे कभी मुक्ति नहीं चाहिए। चलो मान लिया कि बदलाव जीवन जीने की एक कला है सत्ता और दुनियावी रिश्तों से एडजेस्टमेंट का एक हुनर! यह सोचकर हम दूसरों के अनुरूप अपने को भीतर से हर वक्त संपादित करते रहते हैं, पर यह तो अपने आपसे धोखा हुआ सियो! आखिर कब तक हम सेल्फ एडिस्टिंग का शिकार होते रहें? कब तक अपने को धोखे में रखें? दुनिया को खुश रखने के लिए सेल्फ एडिस्टिंग का बोझ आखिर कोई क्यों ढोए सियो? और इस एडजेस्टमेंट शब्द को लेकर उनमें अक्सर मतभेद हो जाता करते थे। वह उस वक्त सोचता रहा क्या एडजेस्टमेंट की भी अपनी कोई खूबसूरत और रचनात्मक जगह होती है? शायद होती हो, शायद नहीं भी! पर अब तक उसने जो देखा समझा था, उससे तो यही लगा था उसे कि एडजेस्टमेंट की कोई सुन्दर जगह नहीं होती। आदमी अनिच्छा से, लालच से या मजबूरी में एडजेस्टमेंट करता रहता है। जीवन भर। उसकी तरह। नौकरी की खातिर। नौकरी बचाने के लिए।

उसे लगता है प्राइवेट संस्थान में काम करते हुए अगर वह एडजेस्टमेंट न करे तो उसकी नौकरी कभी भी चली जाए। सत्ता के सुर में सुर न मिलाने की वजह से कई मीडिया कर्मियों को उनके मालिक नौकरी से निकाल चुके थे। यह सब आज भी वह अपनी नंगी आँखों से देख रहा है

। यह सोचकर ही उसके भीतर डर की एक चिड़िया आकर बैठ गयी थी। सामने चल रहा शख्स अपने ही धुन में चला जा रहा था। सर्दियों का मौसम था। पुमा के स्पॉटर्स शू उस शख्स के पांवों के फिटनेस को जहाँ चुस्त दुरुस्त किये हुए थे वहीं उसने अपनी देह पर एक पशुमिने का शाल ओढ़ रखा था। चीजें उसके ऊपर कितना तो फब रही थीं। उसे फिर से महसूस हुआ कि हर चीज का अपनी सही जगहों पर होना भी कितना जरूरी है। दुधिया कलर का शाल ओढ़े उस व्यक्ति के पीछे पीछे चलना आज उसे दोहरा सुकून दे गया था। 'सुकून भी कितना दुर्लभ हो गया है जीवन में।' - सुकून मिलने के इस दुर्लभ अनुभव ने चलते चलते उसके मन को इस एहसास से भी भर दिया था। फ़बड़े शहर जेब कतरों की तरह होते हैं। वे हमें लुभाते हैं, चकित करते हैं और चुपके से हमारी जेब काट लेते हैं। फ़ बाजू में चल रहे एक कस्बाई आदमी को एक दूसरे कस्बाई आदमी से यह कहते हुए उसने जब सुना तो उसके शब्दों से वह थोड़ा अचम्भित सा हुआ। चलते चलते वह सोचने लगा लोगों के पास न जाने किस-किस तरह के अनुभव होते हैं जिसे वे कितनी खूबसूरती से व्यक्त कर साझा भी कर लेते हैं। साझा करने की बात को लेकर उसके भीतर बहुत सी बातें फिर से आने जाने लगीं। वह सोचने लगा बातों का साझापन भी जीवन की कई छोटी छोटी कहानियों को अपने साथ लेकर चलता है। वह अपने भीतर भी कुछ टटोलने लगा। शायद कोई कहानी हो जिससे वह किसी से सुना सके। जीवन की सारी कहानियाँ समझौतों में लिथड़ी हुई मिलीं

शायद होती हो, शायद नहीं भी! पर अब तक उसने जो देखा समझा था, उससे तो यही लगा था उसे कि एडजेस्टमेंट की कोई सुन्दर जगह नहीं होती। आदमी अनिच्छा से, लालच से या मजबूरी में एडजेस्टमेंट करता रहता है। जीवन भर। उसकी तरह। नौकरी की खातिर। नौकरी बचाने के लिए।

उसे

उसके मैनेजर का आदेश उसे याद आने लगा - फ़यह बात गाँठ बांधकर रख लो कि सत्ता के विरुद्ध कोई टिप्पणी कहीं भी नहीं करनी किसी को। सत्ता कुमार्गी हो जाए तब भी उसकी हीं में हीं मिलाना, उसका सपोर्ट करना निहायत जरूरी है हमारे लिए। सबने कितनी बेशर्मी से उस दिन हाँ में हाँ मिलाया था। उसके बाद किस तरह उसके साथी और वह खुद भी सोशल मीडिया में सत्ता के पक्ष में माहौल बनाने के लिए ट्रोल आर्मी की भूमिका में आ गए थे। यह सब कहानी वह कैसे सुनाए? किस तरह साझा करे किसी से? सुनते ही लोग थू करने लगेंगे उस पर। अचानक उसे लगा कि उसका ज़मीर मर चुका है। एक गालीबाज़ को, एक बलात्कारी को भी वह अब सही ठहराने लगा है। उनके पक्ष में तर्क देने लगा है। सोचकर अचानक लगा उसे, जैसे उसने अपने वजूद को ही किसी गलत जगह पर लाकर टिका दिया है। कुछ समय के लिए उसे अपने आप से धिन्न सी आने लगी। आसमान में सूरज निकल चुका था। सड़कों पर चहल पहल बढ़ गयी थी। उसके आगे-आगे चलने वाला शख्स अब अपने गन्तव्य को जा चुका था। उसके जाने के साथ साथ 'बाबू जी धीरे चलना, प्यार में ज़रा संभलना.....' वाले गीत की ध्वनि भी उससे विदा ले चुकी थी। उस वक्त उसके मन में कुछ इस तरह के भाव आ-जा रहे थे कि उसे लगने लगा जैसे अचानक उसके जीवन में किसी ध्वनि का इंतकाल हो चुका है।

92 श्रीकुंज, बोर्डरदावर, रायगढ़ छत्तीसगढ़

पुस्तक समीक्षा

रोचक किस्सों का दस्तावेज

रोहित कौशिक

जिंदगी के किस्से यदि सपाट रूप से लिखे जाएं तो वे सिर्फ किस्से बन कर रह जाते हैं। जाहिर है सपाटबखानी में वह रचनात्मकता नहीं होती जिससे

माध्यम से कोई भी कथा हमारी स्मृति का हिस्सा बन पाती है। प्रतिष्ठित युवा लेखक विपिन शर्मा ने हाल ही में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'तुम जिन्दगी का नमक हो' में जिंदगी की छोटी-छोटी कहानियाँ रोचक अंदाज़ में लिखी हैं। विपिन शर्मा के गद्य का लालित्य इन कथाओं को और भी प्रभावी बनाता है। ये किस्से छोटे जरूर हैं लेकिन इन छोटे-छोटे किस्सों में बड़ा दर्शन छिपा हुआ है। इन कथाओं का मूल स्वर प्रेम है। अक्सर हम बहुत ही सीमित और परम्परागत दायरे में प्रेम का अर्थ ग्रहण करते हैं। इन कथाओं में प्रेम के विभिन्न स्वरूप महसूस किए जा सकते हैं। जिंदगी से प्रेम किए बिना हम प्रेमिका से भी प्रेम नहीं कर सकते। इसलिए यहाँ एक तरफ जिंदगी से भरपूर प्रेम है तो दूसरी तरफ प्रेमी और प्रेमिका के बीच इश्क की कशिश भी है। जाहिर है कि जब जिंदगी से भरपूर प्रेम होगा तो जिंदगी से जुड़ी विभिन्न विसंगतियाँ भी किसी न किसी रूप से हमारे ऊपर अपना प्रभाव डालेंगी। इसलिए इन कथाओं में कहीं न कहीं जिंदगी की विसंगतियाँ भी मौजूद हैं।

इन किस्सों को पढ़ते हुए महसूस होता है कि इनमें सिर्फ कोरी कल्पना नहीं है बल्कि परोक्ष रूप से लेखक की रोजमर्रा की जिंदगी के अनुभव भी मौजूद हैं। जीवनानुभव से निकले किस्से जिंदगी के ज्यादा करीब तो होते ही हैं, विश्वसनीय भी होते हैं। निश्चित रूप से किसी भी कथा में कल्पनाशीलता का अपना महत्व होता है लेकिन यदि कल्पनाशीलता जीवनानुभव पर आधारित हो तो वह ज्यादा तार्किक होती है। यही कारण है कि इन किस्सों को पढ़ते हुए एक आत्मीय जुड़ाव महसूस होता है। ज्यों-ज्यों हम इस किताब को पढ़ते हुए आगे बढ़ते हैं, त्यों-त्यों इन किस्सों से हमारी रगात्मकता बढ़ती चली जाती है। इस दौर में जबकि बौद्धिक वर्ग कई तरह के वादों में उलझा अतिवाद का शिकार हो रहा है, ये कथाएँ एक बनी बनाई लीक तोड़ती हुई अंधे में लैम्प पोस्ट की तरह हमें प्रकाशित करती हैं।

यहाँ कई शहर हैं, शहर की गलियाँ हैं, गांव हैं, चांद-तारे हैं, पहाड़ हैं, प्रकृति के विभिन्न रूप हैं तथा कई लेखक और शायर हैं। यानी एक मुकम्मल जिंदगी की कई बिखरी हुई तस्वीरें हैं। इन बिखरी हुई तस्वीरों से ही जिंदगी की एक बड़ी तस्वीर जुड़ती और पूर्ण होती है। दरअसल जिंदगी

हमेशा गुलाबी नहीं होती। किसी एक रंग से रंगी जिंदगी वास्तविकता से बहुत दूर होती है। इसलिए कन कथाओं में परेशानियों और संघर्षों का रंग भी है। यह संघर्ष कई स्तरों पर दिखाई देता है। प्रेम के रास्ते पर चलते हुए संघर्ष न हों तो फिर ऐसे प्रेम का क्या औचित्य? कभी यह संघर्ष हमारे प्रेम को और मजबूती प्रदान करता है तो कभी हालात की कठपुतली बनकर हमारे प्रेम को कमजोर भी कर देता है। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि संघर्ष के समय हमारा दृष्टिकोण क्या है? ये कथाएँ विभिन्न परिस्थितियों में कहीं न कहीं हमारे दृष्टिकोण को भी परिलक्षित करती हैं।

इन किस्सों में स्थानीय जीवन की हलचल है तो अन्तरराष्ट्रीय विमर्श भी है। यह सही है कि रोजमर्रा की स्थानीय गतिविधियाँ हमारे जिंदगी का आधार हैं, तो अन्तरराष्ट्रीय गतिविधियाँ भी किसी न किसी रूप में स्थानीय गतिविधियों पर अपना प्रभाव डालती हैं। निश्चित रूप से इस प्रभाव को एक संवेदनशील लेखक ही अपनी रचनाओं में दर्ज कर सकता है। इस बदलाव और प्रभाव को विभिन्न लेखक अलग-अलग तरीकों से दर्ज करते हैं। असली सवाल यह है कि क्या लेखक इन बदलावों को सहज तरीके से अपनी रचनाओं में दर्ज कर पाता है? बड़ी बात यह है कि विपिन शर्मा इन बदलावों को बहुत ही सलीके से इन किस्सों में दर्ज करते हैं। एक ऐसा भी अजीब समय हम सबने देखा है कि जब 'पाँजटिव' शब्द हमारे लिए खतरे की घंटी बन गया था। यदि पिछले कुछ समय के किस्से लिखे जाएँ और उन किस्सों में हमारी जिंदगी को बदरंग करने वाली महामारी का जिक्र न हो जो निश्चित रूप से यह स्वाभाविक नहीं होगा। महामारी के किस्से भी इस किताब को प्रासंगिक बनाते हैं। जीवन्तता और रोचकता से ओत-प्रोत इन किस्सों को निश्चित रूप से पढ़ा जाना चाहिए। इन अद्भुत किस्सों को लिखने के लिए विपिन शर्मा बधाई के पात्र हैं।

फ़िल्म

'कलयुग'

अजय चंद्रवंशी

म

श्याम बेनेगल (1981) हाभारत की कथा विघटित होते गण समाजों और विकसित होते राजसत्ता के दौर की कहानी है। यह अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण के लिए भी चर्चित रहा है। इसमें जिस तरह से सत्ता की केन्द्रीयता है और 'नैतिकता' को द्वितीयक दर्जा दिया गया है वह बाद के सामंती समाजों में कम से कम सैद्धांतिक स्तर पर दुर्लभ रहा है। महाभारत में यह प्रकट रूप से है। वहाँ सत्ता प्राप्ति के लिए नैतिकता-अनैतिकता का मापदंड खत्म सा हो गया है; खून के रिश्ते और पारिवारिक सम्बन्ध बेमानी हो गये हैं। एक तरह से वहाँ आधुनिक पूँजीवादी समाजों की सामाजिक सम्बन्धों को पूर्व पीठिका सा है। यह अकारण नहीं पौराणिक काल निर्धारण में महाभारत(द्विपर) के बाद ही 'कलयुग' का आगमन होता है।

कलयुग(कलियुग) शब्द से ही एक नकारात्मकता का बोध प्रकट किया जाता रहा है। यानी यह युग नहीं मूल्यबोध हो गया है। बल्कि इसे 'सतयुग' के विपरीत देखा जाता है। सतयुग में जहाँ सब कुछ 'अच्छ' था वहीं कलयुग में अधिकतर बुरा। यों कल(कलि)युग का शाब्दिक अर्थ 'मशीनी युग' भी होता है। खासकर पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी के व्यापारिक पूँजीवाद के दौर में सामंती मूल्यों के एक हद तक विघटन ने कलयुग की अवधारणा को बल दिया, क्योंकि लंबे समय से चले आ रहे सामंती मूल्यों का बिखराव एक झटके के समान था जिसकी एक प्रतिक्रिया कलयुग के रूप प्रकट हुई।

'महाभारत' और 'कलयुग' के इस सम्मिलन ने भारतीय समाज को गहरे रूप से प्रभावित किया है। आज भी पारिवारिक कलह की तुलना महाभारत से की जाती है और सामाजिक मूल्यों से विचलन को कलयुग का प्रभाव भी कहा जाता है।

फ़िल्म 'कलयुग' में इसी तरह की पारिवारिक 'महाभारत' की कहानी है। फ़िल्म में एक ही परिवार के दो पीढ़ी के बाद के दो हिस्सों में व्यापारिक परिस्पर्धा और प्रतिष्ठा की लड़ाई है। यह लड़ाई प्रच्छन्न से क्रमशः प्रकट होती जाती है। कहीं तो खून के रिश्ते और प्रेम! और कहीं हर पल दूसरे को नीचा दिखाने की चाह! इसकी चरम बदला और हत्या तक चली जाती है। परिणाम वही होता है सर्वनाश; किसी को कुछ हासिल नहीं!

फ़िल्म में भीष्मचन्द और रामचन्द नामक दो कारोबारी भाइयों की कहानी है। भीष्मचन्द अविवाहित है और उसने रामचन्द के निधन के बाद

उसके दोनो बेटों खूबचन्द और पूरनचंद को पाल-पोसकर बड़ा किया। खूबचन्द के बेटों धनराज और सन्दीपराज की पूरनचंद के बेटों धरमराज, बलराज और भरतराज के बीच अदावत चलती रहती है।

फ़िल्म में महाभारत की तरह एक निरापद पात्र 'करन' भी है, जो अनाथ है और जिसकी भीष्मचन्द ने परवरिश की है। वह धनराज को कारोबार में सहयोग करता है और वहाँ उसका उचित सम्मान है, मगर फिर भी आखिरकार वह पारिवारिक सदस्य नहीं है इसलिए काबिल होकर भी उसकी सीमाएँ हैं। भरतराज और उसके भाई तो और भी उसे उपेक्षित करते हैं क्योंकि वह उनके 'दुश्मन' के खेमे में हैं।

मगर विडम्बना कि वे तीनों उसके भाई ही हैं। पिता की अक्षमता के कारण उनकी माँ सावित्री के

कलयुग(कलियुग) शब्द से ही एक नकारात्मकता का बोध प्रकट किया जाता रहा है। यानी यह युग नहीं मूल्यबोध हो गया है बल्कि इसे 'सतयुग' के विपरीत देखा जाता है। सतयुग में जहाँ सब कुछ 'अच्छ' था वहीं कलयुग में अधिकतर बुरा। यों कल(कलि)युग का शाब्दिक अर्थ 'मशीनी युग' भी होता है।



स्वामी

प्रेमानन्द से संसर्ग से तीन बच्चे हुए जिन्हें पिता का नाम

मिला। करन उन्ही से विवाह पूर्व का सन्तान है जिसे किसी का नाम नहीं मिला इसलिए उपेक्षित है। यह राज सावित्री, भीष्मचन्द तक सीमित है।

करन की योग्यता उसके पहचान के संकेत के आगे निस्तेज है, फिर भी उसमें विद्रोह नहीं मानवीयता है। मगर धनराज के प्रति निष्ठा के कारण वह भरतराज परिवार को पछाड़ने के लिए हत्या करवाने की हद तक जाता है। और जब उसके सामने उन्ही के भाई होने की हकीकत खुलती है तब आत्मत्यागिनि, शोभ और बेबसी के सिवा कुछ नहीं रह जाता। अंततः वह भी कर्ण की तरह मारा जाता है। इस हकीकत से भरतराज का परिवार भी आहत होता है मगर तब तक सब बर्बाद हो चुका होता है।

फ़िल्म में स्त्रियाँ लगभग यांत्रिक हैं और पितृसत्ता के मूल्यों से संचालित हैं। वे इस पारिवारिक तबाही को निष्क्रिय तटस्थता से देखती रहती हैं। सावित्री जरूर कुंती की तरह करन के पास जाकर उसे भाई होने की दुहाई देकर इस बर्बादी को रोकने का प्रयास करती है, और करन द्रुपद से मुक्त होकर सहयोग करने

गज़ल

इब्न-ए-इंशा

दिल हिज़ के दर्द से बोझल है अब आन मिलो तो बेहतर हो

इस बात से हम को क्या मतलब ये कैसे हो ये क्यूँकर हो

इक भीक के दोनों कासे हैं इक प्यास के दोनों प्यासे हैं

हम खेती हैं तुम बादल हो हम नदियाँ हैं तुम सागर हो

ये दिल है कि जलते सीने में इक दर्द का फोड़ा अलहदु सा

ना गुस रहे ना फूट बहे कोई मरहम हो कोई निशतर हो

हम साँझ समय की छाया हैं तुम चढ़ती रात के चन्द्रमाँ

हम जाते हैं तुम आते हो फिर मेल की सूरत क्यूँकर हो

अब हुस्न का रुत्बा 'आली है अब हुस्न से सहरा खाली है

चल बस्ती में बंजारा बन चल नगरी में सौदागर हो

जिस चीज़ से तुझ को निस्वत है जिस चीज़ की तुझ को चाहत है

वो सोना है वो हीरा है वो माटी हो या कंकर हो

अब 'इंशा'-जी को बुलाना क्या अब प्यार के दीप जलाना क्या

जब धूप और छाया एक से हों जब दिन और रात बराबर हो

वो रातें चाँद के साथ गई वो बातें चाँद के साथ गई

अब सुख के सपने क्या देखें जब दुख का सूरज सर पर हो



का प्रयास भी करता है मगर हालात हाथ से फिसलते चले जाते हैं। 'सुप्रिया' का चरित्र द्रौपदी सा है, परिवार में निर्णयों में एक हद तक हस्तक्षेप है पति से एक समय के बाद अनौपचारिक दूरी सी है। आखिर में भरतराज से निकटता बढ़ाने का संकेत है। वह परिवार में अपनी स्थिति मजबूत रखने के लिए प्रयत्नरत दिखाई पड़ती है।

कुल मिलाकर फ़िल्म आधुनिक अभिजातवर्गीय परिवार का महाभारत है। सामंती-पूँजीवादी मूल्यों से संस्कारित इस परिवार में झूठी प्रतिष्ठा और संदेह के आगे मानवता दम तोड़ देती है। ये जितने एक दूसरे के करीब दिखते हैं उतने ही दूर हैं। इनका मिलना-जुलना, इकट्ठा होना सब यांत्रिक है, अंदर कहीं नफरत और प्रतिस्पर्धा है। यहाँ भाई-भाई, पति-पत्नी सब जैसे किसी औपचारिकता का निर्वहन कर रहे हैं। रिश्तों में गर्माहट कहीं नहीं है।

फ़िल्म का निर्देशन, चुस्त कथानक और सांकेतिकता, अभिनय सभी महत्वपूर्ण हैं। पात्रों के दृढ़, परिस्थितियों की विडम्बना और बेबसी को बेहतर ढंग से उभारा गया है। धनराज का आत्महत्या से पहले अपनी छोटी बच्ची से पौयम सुनने का सुखद वातावरण एक झटके में मातम में बदल जाना हतप्रभ करता है। इस तरह और भी छोटी-छोटी घटनाएँ हैं जो सार्थक निर्देशन को प्रकट करते हैं। पात्रों की संख्या अधिक होने के कारण भूमिकाएँ सीमित मगर महत्वपूर्ण हैं। महाभारत अपने विराटता और यथार्थवादी चित्रण के कारण हर दौर के कलाकारों को प्रभावित करता रहा है और आगे भी करता रहेगा।

कवर्धा

नवविवाहिता को प्रताड़ित कर आत्महत्या के लिए कृष्णेश्वरिणी



कोण्डाग्राम, 30 सितंबर (देशबन्धु)। नवविवाहिता को प्रताड़ित एवं आत्महत्या के दुष्प्रकरण होने वाले आरोपी पति पंकज कुवर को कोण्डाग्राम पुलिस द्वारा गिरफ्तार करके जेल भेजा गया।
नवविवाहिता द्वारा आत्महत्या कर लिए जाने के मामले को गंभीरता के साथ देखते हुए कोण्डाग्राम

एच.पी.येदुवल्ली अक्षय कुमार (आईपीएस) द्वारा आरोपी को लकाल पतासाजी कर गिरफ्तार करने के आदेश देने पर एडि.एस.पी.डी.एल.राजेश कुमार के मार्गदर्शन एवं कोण्डाग्राम पुलिस थाना के निमित्त विहारे के पंचायत के प्रकरण के आरोपी पंकज कुवर को गिरफ्तार कर मजदूरी न्यायालय के आदेश से जेल भेजा गया।

आरोपी पति पंकज को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

जात हो कि 20 सितंबर 2023 को 12.30 बजे से दोपहर 02.50 बजे के मध्य मुक्तिदा श्रीमति सुमति कुवर पति पंकज कुवर 26 वर्ष निवासी सरगोपालपुरा कोण्डाग्राम ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया था। प्राची विकास कुवर की रिपोर्ट पर मां क्र.164/2023 प्रा. 174 जाफे कायमकर जारी में लिया गया। मुक्तिदा नवविवाहिता होने से मां जांच कर्मचारीका रूपाधिकारी के द्वारा प्रश्न किया, जांच के दौरान मुक्तिदा के मायके प्रश्न के कथानुसार मुक्तिदा को अपनी सुखी कुवर का विवाह सामाजिक रिश्ते विवाह से वर्ष 2022 में पंकज कुवर पति सुमति कुवर निवासी सरगोपालपुरा कोण्डाग्राम में पंख हुआ था। शादी के कुछ माह बाद उसके पति पंकज कुवर के द्वारा मुक्तिदा सुमति कुवर के साथ फरेलु विवाद लड़ाई इंग्रज कर आदि मारपीट कर प्रताड़ित करता था जिस कारण मुक्तिदा शारीरिक एवं मानसिक रूप से परेशान थी। 20 सितंबर 2023 को भी आरोपी पंकज द्वारा फरेलु विवाद लड़ाई इंग्रज मारपीट कर प्रताड़ित करने से मुक्तिदा सुमति कुवर परेशान होकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिये हैं। आरोपी पंकज कुवर का कृष्ण प्रा. 306, 498 (ए) नाविका का अवरुध घटित करना पड़ा जाने से अग्रिम कायम कर विवेचना में लिया गया और साक्ष्य पत्र जाने पर आरोपी के विरुद्ध उपरोक्त कानूनी कार्रवाई की गई।

25 से अधिक भाजपा व कांग्रेस समर्थित कार्यकर्ताओं ने थामा लाल झंडे का दामन : भाकपा



बीजापुर, 30 सितंबर (देशबन्धु)। जनसमर्थक अभियान के तहत आज सीपीआई की टीम उत्सव बहकें पृथ्वी सीपीआई जिला समर्थक समर्थक शाही और टीम के साथियों ने आम जनता के साथ एक मोर्चा

रोजगार भाग गंगा में किसी प्रकार का कोई रोजगार नहीं दिया शिक्षा स्वास्थ्य बिक्री नहीं किसी भी प्रकार का कोई बुनियादी सुविधाएं नहीं दी इस लिए हमने सीपीआई का दामन थामा है अपने बालों दिनों में अपनी

मौजूदा कांग्रेस को सरकार व बीजापुर के स्थानीय विधायक के आवासों क्षेत्र में कुशांतर वादाखिलाफी राषण ठगी करने जैसे गतिविधों का लगाया गंभीर आरोप : कामरुद कमलेश्वर झाड़ी

एक और अधिकार के लिए संघर्ष करेगी और विधानसभा चुनाव में हम इसका चुनाव लड़ेंगे। वही सीपीआई जिला से विधायक कामरेश्वर झाड़ी ने

सीपीआई का दामन थामा है। वहीं लोगों ने आरोप लगाया है कि मौजूदा कांग्रेस की सरकार और स्थानीय विधायक ने आम जनता से डूबे हुए लाल से आवासों क्षेत्र के लोगों को ठगी है किसी भी स्थानीय युवा बेरोजगार को न तो नौकरियां मिलते न ही

सभी कार्यकर्ताओं को लाल मकान प्लानकर पापों में डालने का प्रयास है। इस दौरान सीपीआई के नरेशि कमरेश्वर लाल के साथी नारायण जी, कामरेश्वर लाल, चणु लाल, योगेश आदि भाजपा नेता मौजूद रहे।

6 से तीन दिवसीय रामधुनी प्रतियोगिता

चारामा, 30 सितंबर (देशबन्धु)। नगर चारामा के राम सहाय चौक में इस वर्ष लगभग 50वां वर्ष गुणवत्तरपूर्ण दिवसीय भवन सोनीमन रामधुनी प्रतियोगिता का आयोजन 6 अक्टूबर से 8 अक्टूबर तक किया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ 7 वीं वर्ष प्रतियोगिता 6 अक्टूबर को प्रा. 4 बजे शुरू हुआ। शोला नरेशि प्रतियोगिता व प्रथम पदोन्नत व संस्थापक सहित विधाओं का आयोजन समिति के द्वारा किया जाएगा। इस रामधुनी प्रतियोगिता में 25 से अधिक मंडलवीय झांकी को प्रथम पुराना नाम की प्रतियोगिता में।

साहित्यिक में झांकी प्रदर्शन पर प्रथम पुरस्कार 7101 रूप्य, द्वितीय 5101 रूप्य, तृतीय 3101 रूप्य, चतुर्थ 2501 रूप्य, पंचम 2101 रूप्य और सातवा प्रदर्शन पर प्रथम 5101, द्वितीय 3101, तृतीय 2501, चतुर्थ 2101 रूप्य और पंचम पुरस्कार 1501 रूप्य सहित सभी मंडली को चांदी का राम दरबार दिया जाएगा। प्रतियोगिता का समापन 08 अक्टूबर को होगा। प्रतियोगिता का आयोजन समिति के पदाधिकारी अध्यक्ष विनोद साहू, उपाध्यक्ष चणु लाल देवान, नरेशि सोनकर, परेशि सोनकर, कोषाध्यक्ष शिवा कुमार सोनकर, अनंद देवान, नरेशि रावित देवान, संरक्षक चणु देवान, नारायण सोनकर, अमल लाल देवान, भार्गव देवान, धर्म देवान, लालकाश लखार, राम, संकर लखार, सखदेव भुआवर, जैलराम देवान, दीना सोनकर, जगन्नाथ देवान, नारायण साहू, राधेश्याम सोहिल, नंद कुमार देवान, चारामा सोनकर सहित कर्मचारी सदस्य और गणतंत्रसिंधी के सदस्यों से किया जा रहा है।

शिवसेना प्रत्याशी ने रैली निकालकर विरोध किया झट्टाचार के खिलाफ रमन सिंह व भूपेश का किया पुलता दहन



कोण्डाग्राम, 30 सितंबर (देशबन्धु)। शिवसेना प्रत्याशी के द्वारा शिव सेनिकों के साथ रैली निकालकर भाजपा कार्यकर्ता का विरोध करने के साथ ही भद्राचार के खिलाफ रमन सिंह एवं भूपेश की भी पूजा बनेगी का पुलता दहन किया गया।
नगर में शिव सेनिकों का एक नए प्रचारार्थि घनघराम प्रकाम के साथ बड़ी संख्या में प्रदर्शन किया। भद्राचार के खिलाफ और कोण्डाग्राम में चल रहे घोटाला गैंग के विरुद्ध प्रदर्शन कर पुलता दहन करने के साथ ही शिव सेनिकों ने भूपेश एवं रमन सिंह के खिलाफ कार्य के खिलाफ उममकर नरें लागार। विगत दिनों कोण्डाग्राम में पूर्व कलेक्टर के द्वारा महिलाओं के विरुद्ध किए गए लूट के खिलाफ पूर्व अतिरिक्तियों के शोषण के खिलाफ आजकल उठते साथ ही कोण्डाग्राम में प्रताड़ित अरजतल रूढ़ रहे

है। जितना को आदिवासी को इसके विरुद्ध आजकल उठकर आंदोलन को चलाना ही। कार्यक्रम में मुख्यतः आरक्षीयों वही प्रेरणा महासचिव शिवसेना, युवासेना छत्र, चंद्रमण श्रीवास्तव, राजा गहारे, अमण, दीपक खजूरत, नदी नारायण, आरंभ बेरगा, पिलामन मौर्य, रंजु पंडित के साथ भाजपा कार्यकर्ता के साथ कार्यकर्ता न पदाधिकारी मौजूद रहे।

कोटपा अधिनियम के तहत 20 व्यापारियों पर हुई चालानी कार्रवाई

कोण्डाग्राम, 30 सितंबर (देशबन्धु)। कोटपा अधिनियम के तहत 20 व्यापारियों पर चालानी कार्रवाई करने के साथ ही समस्त व्यापारियों को दुकानों पर धूम्रपान प्रयोग बंद होई एवं दुकान के समीप धूम्रपान न करने देते हुए निर्देश दिए गए। कोण्डाग्राम कलेक्टर दीवी सीपी एवं मुख्य निदेशिका एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आर.के.सिंह के निदेशानुसार जिला नरेशि अधिकारी राष्ट्रीय समाजक निरंजन कार्यक्रम डॉ.ज्योति दुग्गा एवं जिला कार्यक्रम प्रबंधक नारायण महलवार के मार्गदर्शन में औषधि एवं प्रासासन विभाग के अधिकारी निरीक्षक सुप्रचय सिंह एवं मृदा सहायक रामेश्वर करत द्वारा बीबीएम और बहोदागं को चालानी कार्रवाई के मांफिस्ट को गैर (डक चालानी कार्रवाई में व्यापारियों द्वारा नियम के पालन नहीं किये जाने पर 20 व्यक्तियों पर चालानी कार्रवाई करते हुए नाराज द्वारा 1900 रूप्ये बसुल किये गए। इसके साथ ही समस्त व्यापारियों को अपने दुकान पर धूम्रपान निषिध क्षेत्र बालन बंदे लगाने एवं दुकान के समीप किसी भी चीज को धूम्रपान न करने देते निर्देश दिए गए एवं अपने दुकान पर कोटपा अधिनियम के तहत प्रतियोगिता समाजक उपचार जिसमें विद्यार्थक चालानी निर्दिष्ट न हो, ऐसे तथ्यांक उपचार का क्रय विक्रय नहीं किया जा हेतु निर्दिष्ट किया गया।

83 व्याजों को शिशुमक एरो ग्रीब टांकाकरण व स्वास्थ्य पोषण कोण्डाग्राम, 30 सितंबर

(देशबन्धु)। विश्व स्त्रीय दिवस पर 28 सितंबर को कलेक्टर दीवी सीपी के मार्गदर्शन में जगन्नाथलाल राघु विक्रमेश्वर शंकराई डॉ. शिवरामेश्वर पाण्डेय के निदेशन में नि-रूकूटी एवं स्त्रीय टांकाकरण एवं जाण्डकाका का संक्रम का आयोजन राघु विक्रमेश्वर कोण्डाग्राम में किया गया। इस दिवस में 83 स्वास्थ्य सेवक पालतु वाना का स्वास्थ्य परीक्षण एवं एरो ग्रीब टांकाकरण का कार्य किया गया। कार्यक्रम में पूरे जिले के राघु विक्रमेश्वर एवं विश्व विकार उपस्थित रहे। उपसंचालक राघु विक्रमेश्वर सेवक एरो ग्रीब बीबीएम के नरेशि प्रथम एवं गौरीनाथ को देखते हुए प्रथम स्थान पर प्राप्त किया। निदेशिका को देखते हुए अतिरिक्त एरो ग्रीब टांकाकरण करते हुए अतिरिक्त एरो ग्रीब टांकाकरण द्वारा इस दिवस में पहले से ही स्वास्थ्य के विचारधारा को देखते हुए प्रति जाण्डका एवं 46 कृती को समसदी भी किया गया। लाभाईत वाना के टांकाकरण में एरो ग्रीब शक्ति परसेलर का भी समर्थन प्राप्त हुआ।

व्यवहार न्यायालय बीजापुर में किया गया साफ-सफाई व श्रमदान



बीजापुर, 30 सितंबर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय बीजापुर (छापी) के निदेशानुसार एवं विजय कुमार होडासा विवाह लिला सेवा प्राधिकरण / जिला एवं उच्च न्यायाधीश दक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा के मार्गदर्शन में ताजुद्दीन आसिफ, अजय, तातुका विधिसेवा समिति बीजापुर / मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट बीजापुर (छा) द्वारा 25 सितंबर

कर्मचारीगण, अधिवक्ता संघ के सदस्य स्वच्छता भाग, एस.एच.डी अधिवक्ता, डी. सुवर्णनारायण अधिवक्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम में कोतवाली बीजापुर के निरीक्षक सुरेश यादव, थाने के पुलिस कर्मचारी तथा नगर पालिका बीजापुर के कर्मचारियों ने स्वच्छे से बह-बहकर हिस्सा लिया। सभी लोगों ने न्यायालय परिसर में साफ-सफाई की और खरबजान को साफ किया। न्यायाधीश द्वारा आम जनता से स्वच्छता बनाये रखने के लिए अपने आवा-पान में निरीक्षक साफ स्वच्छ करते रहने की अपील की, साथ ही स्वच्छ कर्मि महानगा गांधी की अर्पित के उपस्थिति में आयोजित स्वच्छता सहाय साफ-सफाई के लिए सभी को प्रेरित करता है, क्योंकि महानगा गांधी स्वयं स्वच्छता प्रेमी थे और अपने शौचालय को साफ रख कर स्वच्छता करते थे।
कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए न्यायाधीश द्वारा सभी सहभागियों व्यक्तियों को धन्यवाद प्रार्थना किया गया और अभिषेध में भी अपने घर, कालोनीय और सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता बनाये रखने की अपील की गई।

संयुक्त नव प्रबंधन समितियों को प्राप्त लाभांश राशि से सामग्री वितरण विस उपाध्यक्ष संतराम नेताम श्री कार्यक्रम में हुए शामिल

कोण्डाग्राम, 30 सितंबर (देशबन्धु)। कोण्डाग्राम जिले के के.केशवल विद्यार्थक खंड अतिरिक्त प्रभु संतराम कोहरेवाले में इन विभाग द्वारा संयुक्त नव प्रबंधन समितियों को प्राप्त लाभांश राशि से सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें विभाग सभा उपाध्यक्ष एवं के.केशवल विद्यार्थक संतराम नेताम शामिल हुए। इस दौरान विभाग सभा उपाध्यक्ष के हाथों से इन प्रबंधन समितियों को कार्यक्रम से प्राप्त होने वाली राशि का उपभोग कर लाने, सामग्री एवं कोषाकरों के समर्थित के लिए सामग्री एवं कोषाकरों समर्थित भेजे, वस्त्र, आलमारी, डेस्क, कुर्सी, साईड सिरस्य, चर्चाई आदि का वितरण किया गया। इसके साथ ही शहीद महेंद्र कर्म जीवन वाना अनुदान राशि वितरण कार्यक्रम के तहत 5 लोगों को 2-2 लाख रूप्य का चेक भी प्रदान किया गया। इस अवसर पर प्रभु पंचात



कोषमेटा में विद्यार्थक संतराम ने 75 लाख रूप्य की राशि से बने जाने वाली नवीय हेल्ट फहन निर्माण शुरू करवाया। सामग्री एवं कोषाकरों के समर्थित के लिए सामग्री एवं कोषाकरों समर्थित भेजे, वस्त्र, आलमारी, डेस्क, कुर्सी, साईड सिरस्य, चर्चाई आदि का वितरण किया गया। इसके साथ ही शहीद महेंद्र कर्म जीवन वाना अनुदान राशि वितरण कार्यक्रम के तहत 5 लोगों को 2-2 लाख रूप्य का चेक भी प्रदान किया गया। इस अवसर पर प्रभु पंचात

नगरजनों से मिली लता उसेंडी प्रधानमंत्री मोदी की आमसभा में आने का दिया आमंत्रण



कोण्डाग्राम, 30 सितंबर (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बस्तर आमसभा और 3 अक्टूबर को राष्ट्रीय भवन में होने वाली आमसभा को आमंत्रित करने के लिए नगर पालिका द्वारा पत्रिका शीक रस है। भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लता उसेंडी के नेतृत्व में स्थायीय सट्ट में युवा मोर्चा के पदाधिकारियों ने नगर के सभी समझौते व्यापारिगण एवं गणमान्य नागरिकों से संपर्क किया व बड़ी संख्या में आमंत्रण में सहमति मिले आमंत्रित किया। इसके साथ ही पीएम मोदी की प्रस्ताविका को संकेत कर विचारों किया। शहर में विभिन्न समाज को महिलाओं से संपर्क कर देखे को गई संसद में महिलाओं की 33 प्रतिशत आधुनक दिग्दर्शन वाले नारी शक्ति बंधन बिल बिना किसी प्रतिबंध के पारित करने वाले प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की आमसभा में आने के लिये उन्हे आमंत्रित किया। इस दौरान सतीय चणु, विकास दुआ, नारायण देवान, रंजक पटेल, मनोसा शर्मा, दिनेश कार्फियु, दिवू साहू, योगेश नारायण, भोला लखार, रवि पटेल सहित बड़ी संख्या में युवा मोर्चा पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बेहतर स्वास्थ्य के लिए श्री अन्न वरदान : डॉ. पंडा



दंतेवाड़ा, 30 सितंबर (देशबन्धु)। कलेक्टर विनीत नंदनवार के निदेशन एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला बाल विकास विभाग के मार्गदर्शन में युनिफ़ॉर्म के सहयोग से सुपोषित भारत, शिशु पोषण योजना, स्वास्थ्य सेवा एवं वृद्धों पर राष्ट्रीय पोषण माह एवं वृद्धों के बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान पर एक दिवसीय शिवा स्तरांगी काशीशाशा आयोजित किया गया।
कार्यशाला में जिला कार्यक्रम अधिकारी ने बताया कि इस आयोजन में स्तनपान और पूरक आहार के आसपास के प्रमुख विषयों का विचार केंद्रित करते वाले अभियानों के माध्यम से जमीनी स्तर पर पोषण संबंधी जागरूकता बढ़ाने के लिए विभाग के माध्यम से प्रयास किया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग के डॉ. अनन्या वसु ने बताया कि पहले युवाओं की अन्न या मिलेसक का प्रयोग करते थे, जिसका बदलते समय में धर्म में सामान्य की शैली बहुत बदल गई है। जिससे कोषि और अर्धे पोषण में शामिल कर पोषण के सभी फायदे लिये जा सकते हैं। जिला महिला बाल विकास अधिकारी श्रीमती आशा सहदान ने कहा कि कोषि अन्न बर्हिणियों पर बेटी की तरह एवं होना चाहिए। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान व बर्हिणियों की सुरक्षा के लिए



सकरो रूप्य रूप से गंभीर है। महेश्व कर्मा महाविद्यालय के प्रोफेसर श्रीमती अनंदा शा ने कार्यशाला में बताया कि बालिकाओं को हेर डेय में आत्मनिर्भर बन रहे हे हमें उत्कृष्ट हेर-एक समान सामान सुनिश्चित करने और प्रचारों को जहाँ तक तक की आगे बढ़ने के लिए प्रयत्न के समान अवसर मिले। युनिफ़ॉर्म के जिला समन्वयक विनोद साहू ने बताया कि किशोरोवस्था में वृद्धि और विकास तेजी से होता है। इस समय में स्तनपान आहार बना जरूरी है। साथ ही उनके द्वारा बाल अधिकार चाइल्ड लाइन हेल्पलाइन सेवा नम्बर 1098-1121 एवं बाल-विवाह के नुकसान की जानकारी दी गई।

कलेक्टर ने फसलाव के निर्वाचन कटौल रूप सहित मतदान केंद्रों का किया निरीक्षण

कोण्डाग्राम, 30 सितंबर (देशबन्धु)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सीमती आर.सी. विभावर सभा निर्वाचन 2023 के लिए सभी व्यवस्थाओं का जा रही है, जिसके तहत अतिरिक्त को कलेक्टर द्वारा पूर्वी बोरावग एवं पत्तोड़ के मतदान केंद्रों का निरीक्षण करने के दौरान बंद में सभी व्यवस्थाओं को देखते हुए फसलाव एवं एडिओप अतिरिक्त साहू तथा वहां के तहसीलदार एवं एचओओं को निर्वाचन की तिथि के पूर्व सभी आवश्यक सुविधाओं को बंद में उपलब्ध करने, इसके लिए उन्हे निर्देशित अधिकारी को सभी मतदान केंद्रों में जाकर व्यवस्थाओं की जांच करने, सभी सेक्टर अधिकारियों एवं पुलिस सेक्टर अधिकारियों को लगातार अपने क्षेत्र का दौरा कर मतदान केंद्रों में व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए विभाग के निर्देशों में दिग्दर्शन हुए, पानी, शौचालय, बिजुल, डेस्क एवं अन्य सामग्री सुनिश्चित करने की कहे हुए उन्हे निर्देशित किया। साक्षात्कार के दौरान शाला बड़ेश्वर, जगन्नाथ प्रभुनिक शाला बड़ेश्वर, जगन्नाथ लाल पटेल, उज्जवल गणेशकर विद्यार्थक जैतुरी, शिशुकि शिवराम शर्मा से जाकर मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया। फसलाव सहित मतदान केंद्रों में बनाए गए निर्वाचन केंद्रों का निरीक्षण करके को कलेक्टर को सूचित करने के लिए निर्देश दिए। इसके साथ ही को कलेक्टर को 24 घंटे संचालित करने के लिए आवश्यक स्टाफ को नियुक्त करने को कहा। इस अवसर पर एडिओप अतिरिक्त साहू, लालेश्वर उज्जवल गणेशकर आशा अरुण अधिकारी उपस्थित रहे, सहितलर ने प्रो मैग्निफिकेन्स काव्यासा बोरावग एवं प्रो मैग्निफिकेन्स काव्यासा जैतुरी को भी निर्देशित करके उज्जवल गणेशकर को व्यवस्था, भांड, वस्त्र, अन्य सुविधाओं जैसे मच्छदानी, माई की उपलब्धता आदि संबंध में विस्तृत कहे।

राजधानी में नयनभिराम झांकियों ने क्रिया मंत्रमुग्ध



रायपुर, 30 सितम्बर (देशबन्धु)। राजधानी में शनिवार को रास धन को मंत्रमुग्ध करने वाली चली झांकियों का प्रदर्शन किया गया। जिसके देखने के लिये हजारों लोग सड़क उमड़ता रहा। झांकियों में पौराणिक कथाओं को दर्शाया गया है। रास के साथ अनेक चर्चदानी भी प्रारंभ हुए। गणेशोत्सव का समापन भी हो गया।

उल्लेखनीय है कि राजधानी में गणेशोत्सव को लेकर उत्साह नजर आने लगा था लोगों ने पहले शहर में स्थिति गणेश प्रतिमाओं का धूम धूम कर दर्शन किया। जिसके बाद आस-पास झांकियों को देखने लगे पड़ें। इस दौरान जिन झांकियों का प्रदर्शन किया गया उनमें प्रमुख रूप से मनोकामना साधने कस्ब गृहलक्षण चौक द्वारा प्रदर्शित झांकी में समाटी मध्यमा लक्ष्मण के साथ गुरुद्वार पर सवार अयोध्या वापसी का चित्रकन किया गया इसमें हनुमान जी भगवान राम की चरण पादुका सिर रखकर बीच खड़े हुए हैं। वहीं श्री राम विमोचन गणेशोत्सव समिति रावतौर चौक द्वारा प्रदर्शित झांकी में गणेश सिंहासन में विराजमान है इसके अलावा विनायक गणेश उत्सव समिति के द्वारा प्रदर्शित झांकी में गणेश जी धैर्य पर सवार हैं जिसे देखकर लोग मंत्रमुग्ध हो रहे हैं। एक झांकी में राधाण तपस्या लीन है और स्वर्ग को अप्सराएँ नृत्य करती हुई उनकी तपस्या को भंग करने में सुरु इसके अलावा अन्य स्वर्ग के अन्य

देवी देवता भी उनकी तपस्या को भंग करने का प्रयास कर रहे इसमें स्वर्ग के राजा इन्द्र हाथी में सवार है और देवता से कह रहे कि किसी रागण की इस तपस्या को भंग करो। इसके बाद वाली झांकी महाभारत के युद्ध को दर्शाया गया है श्री गौरी गंगा गणेश उत्सव समिति द्वारा प्रदर्शित इस झांकी पिनाम अर्जुन के बाण से प्रयास करके बाणों की शैल्या पर लट्ट हुए और काही दृष्टिगत आदि जहां एक ओर युद्ध नोति तैयार करते दिख रहे हैं वहीं पांच पाण्डू भाई मौर्यामितामर के समूह खड़े इस हृदय विदारक दृश्य को प्रदर्शित करने वाली झांकी देखकर लोगों का शरीर रोमांचित हो रहा था।

वहीं सुन्दर कवच भन्वरी के द्वारा प्रदर्शित झांकी भगवान विष्णु गृहलक्षण नयन देवता के रूप राजा से लीन पा भूमि दान के रूप मांग रहे दृश्य को प्रदर्शित किया गया है और भगवान कृष्ण वेदक यह सब देखकर रहे है इस महाहारी दृश्य को देखने के बाद बाद वाह करके नजर आ रहे हैं। इन झांकियों के अलावा भी सैकड़ों सजावट में झांकी का प्रदर्शन किया गया।

पुलिस की रही चौक-चौधक व्यवस्था
राजधानी में चलित झांकियों के प्रदर्शन के दौरान किसी प्रकार की अप्रिय घटना घटित न हो इसके लिये पुलिस को पन्च चौक व्यवस्था की गई थी हर झांकी के साथ पुलिस अधिकारी के साथ बल नजर आ रहा था। जहां कहीं भी रास में झांकियों

को लेका जाता तुरंत इन ओर बढ़ाने के लिए समिति के पदाधिकारियों से कहा जाता। रावतौर चौक से सवार होकर रास धन हुआ था इसी दौरान उत्सव के बीच एक पोस्ट बनाया गए थे। राजधानी में मन मंत्रमुग्ध करने झांकियों को देखने के लिये लोगों का अपार जमाव उमड़ता रहा। लोग बंद कनेक के नीचे खड़े होकर झांकी को निहार हुए नजर आ रहे थे।

रास धन खूबो रही खाने-पीने की दुकानें
राजधानी में झांकियों का प्रदर्शन होने वाला है जिसे लेकर देवी खाने वाले खाद्य सामग्रीयों को लेकर दुकान लगा रही थी इस दौरान भीड़ मौजूद लोग इस खाद्य सामग्रीयों का बेच-बिक्री का बीच-बीच लुफ उठा रहे थे।

आप इस दौरान कुछ लोग बच्चों के भेजे में लिए झांकी को दर्शन करते हुए नजर आए वहीं अपार जमाव रास धन हुआ था इसी दौरान उत्सव के बीच एक पोस्ट बनाया गए थे। राजधानी में मन मंत्रमुग्ध करने झांकियों को देखने के लिये लोगों का अपार जमाव उमड़ता रहा। लोग बंद कनेक के नीचे खड़े होकर झांकी को निहार हुए नजर आ रहे थे।

रास धन खूबो रही खाने-पीने की दुकानें
राजधानी में झांकियों का प्रदर्शन होने वाला है जिसे लेकर देवी खाने वाले खाद्य सामग्रीयों को लेकर दुकान लगा रही थी इस दौरान भीड़ मौजूद लोग इस खाद्य सामग्रीयों का बेच-बिक्री का बीच-बीच लुफ उठा रहे थे।

रास धन खूबो रही खाने-पीने की दुकानें
राजधानी में झांकियों का प्रदर्शन होने वाला है जिसे लेकर देवी खाने वाले खाद्य सामग्रीयों को लेकर दुकान लगा रही थी इस दौरान भीड़ मौजूद लोग इस खाद्य सामग्रीयों का बेच-बिक्री का बीच-बीच लुफ उठा रहे थे।

रास धन खूबो रही खाने-पीने की दुकानें
राजधानी में झांकियों का प्रदर्शन होने वाला है जिसे लेकर देवी खाने वाले खाद्य सामग्रीयों को लेकर दुकान लगा रही थी इस दौरान भीड़ मौजूद लोग इस खाद्य सामग्रीयों का बेच-बिक्री का बीच-बीच लुफ उठा रहे थे।

अन्यपक्षों की प्रजावा को धारित छोटी प्रियाओं के विरतन में निवेशित करत वृद्ध से मुर-मुरा तो आस भी चले। परंतु व प्रियाओं में विराते प्रियाओं को लोचने में प्रदायक के साथ विरतन किया। विरतों का पत्र भवकृत तो था तब आशों में अंशु आ जा रहे थे बच्चे बच्चा को के आने परस जमाने को जकरोर लगा रहे थे और शेष लक्ष्य के साथ धन भी रहे थे विरतों को बाली बनने वचुर्न सभी समाधान से इस पत्र के साथ नजर रहे थे।

कहीं-कहीं भंशरा प्रयादी तो कहीं-कहीं शेष धमल आठवारादी को बीच पर तो जा रही थी और कामेश्वरधामा महोत्सव था।

कांग्रेस ने तय किए प्रत्याशियों के नाम अब पितृ पक्ष के बाद जारी होगी सूची, कांग्रेस स्कीनिंग कमेटी की आज बैठक

रायपुर, 30 सितम्बर (देशबन्धु)। प्रदेश कांग्रेस ने लामाभा सूची 90 विधानसभा सीटों के लिए अपने प्रत्याशियों की सूची तय कर ली है। हालांकि सूची जारी होने में अभी देर हो सकती है। पितृ पक्ष को बहाल से पार्टी अभी सूची जारी नहीं करेगी। पार्टी सूची को मारने तो गृहकार्य को सुचारू रूप से चलाए जा रहा है। काँग्रेस में जयदत्त पहालान तथा है। उनका नेतृत्व में आगामी 2024 के निर्वाचन चरण में है। इन्होंने विधानसभा प्रत्याशियों के नाम प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा जितना पार्टी को पहली सूची सारणगा 45 दिन पहले जारी हो गई है तब काँग्रेस

काँग्रेस सूची जारी होते ही मचेगा गदार-धुल
काँग्रेस अब तक प्रत्याशियों की एक भी सूची जारी नहीं कर पाई है। इसे लेकर भाजपा उस पर तब तक रही है। नेता प्रकाश चरणवर्मा ने कहा कि काँग्रेस में जयदत्त पहालान तथा है। उनका नेतृत्व में आगामी 2024 के निर्वाचन चरण में है। इन्होंने विधानसभा प्रत्याशियों के नाम प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा जितना पार्टी को पहली सूची सारणगा 45 दिन पहले जारी हो गई है तब काँग्रेस

बैठक विचारकों को शाम 4 बजे राजीव भवन में होगी।
कमेटी के अध्यक्ष अजय माकन बैठक करेंगे। बैठक में विधानसभा चुनाव के लिए प्रत्याशियों के चयन पर चर्चा होगी। बैठक में कमेटी के सदस्य नीता हिड्या, हनुमंती, मुकुंमणी प्रभा वनेत, पीनोसी अशोक दीपाक व, प्रदीप प्रभा कुमारी लैला, डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव, धामसना



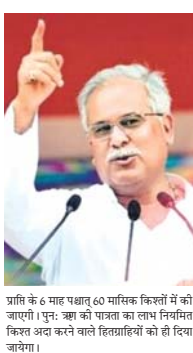
जानें हैं और इसी भय से वे सूची जारी करने से बच रहे हैं।

प्रदेश की महिलाओं को अब छह लाख तक का ऋण देगी राज्य सरकार

रायपुर, 30 सितम्बर (देशबन्धु)। मधुपुरी सरकार अब महिला कांच आ योजना में महिलाओं को छह लाख तक का ऋण देगी। अभी तक यह राशि चार लाख रुपये थी। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को कांच के बाद नया सरकार ने इसके लिए अतिरिक्त जारी कर दिया है।

दो माह की रायपुर के साइंस कालेज में आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम, सहकारिता के अंतर्गत के आधार समेलन में मुख्यमंत्री बघेल ने महिला समूहों को छह लाख रुपये तक देकर और महिलाओं के लिए ऋण लेने को पाठना शर्तों को सरल करने को घोषणा की थी। इस संबंध में राज्य सरकार ने आदेश जारी कर दिया है।

उपरोक्त महिला को कांच आ योजना अंतर्गत छह महिला समूह विनिर्देश प्रथम बार को ऋण देना दिया है। उन्हें 4 लाख के स्थापना पर अब अधिकतम 6 लाख ऋण का पाठना किया गया। साथ ही 4 से 6 लाख रुपये तक की ऋण की अद्ययता, महिला-व्य-सहायता समूहों से ऋण



राज्य के वार्षिक आय के आधार पर निर्धारित होगी ऋण की पाठना। इसके अतिरिक्त समलप योजना के अंतर्गत पाठना को शर्तों को स्थगित बनाया गया है। महिला हिड्यादी को ऋण लेने को पाठना परिहार को वार्षिक आय के आधार पर उसके वार्षिक वार्षिक आय के आधार पर निर्धारित होगा। पाठना वार्षिक आय वार्षिक रूप से। लाख के स्थापना पर अब नया महिला को वार्षिक आय की सीमा राशि रूप से 2 लाख रुपये तक होगी अब ऋण को पाठना होगा।

गौतमवर्ष है कि महिला को ऋण द्वारा ऋण योजना व सशक्त योजना के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से समुद्र करने के लिए मात्र 3 प्रतिशत वार्षिक ऋण को दर से ऋण उपलब्ध कराया जाएगा है।

मुख्यमंत्री बघेल ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से महिला को कांच आ बहाल देती वार्षिक आय में लामाभा 100 नवीन महिला समूह प्रारंभ किया है। साथ ही 4 लाख तक का ऋण देना दिया गया है।

भाजपा केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक आज, कई नेता दिल्ली रवाना

रायपुर, 30 सितम्बर (देशबन्धु)। विधानसभा चुनाव 2023 को लेकर कल दिल्ली में भाजपा के केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक होगी, जिसमें अखिल भारतीय नेताओं पर चर्चा होगी।

बैठक में शामिल होने हेतु राजधानी के कई दिग्गज नेता दिल्ली रवाना हुए। बताया जा रहा कि भाजपा की दूसरी सूची केंद्रीय भी आ सकती है, जिसमें मुख्यमंत्री प्रदेश अध्यक्ष अजय माकन, नेता प्रतिपक्ष नारायण चंडेन, पूर्व मुख्यमंत्री जे. जयप्रकाश नारायण व अन्य प्रत्याशित, ओपी मोदी दिल्ली रवाना हुए। प्रदेश अध्यक्ष अजय माकन ने कहा, 21 प्रत्याशियों को सूची चर्चा होगी। बहुत जल्द मन प्रत्याशियों को लेकर सूची जारी कर दी है। कमेटी को बैठक में अन्य सीटों को लेकर नामों पर चर्चा होगी।

अजय माकन ने कहा कि आज विधानसभा में भाजपा की पहिले मासखंडवर्ष लोचनी ऐतिहासिक रूप से सरल हुई है। प्रथममंत्री नंद मोदी ने आधिकारिक रूप से सफल हुई है, निश्चय आज ही परिवर्तन का संकेतन आने हो रहा है। सासु के बाद 21 प्रत्याशियों को पहली सूची जारी कर दी है।

अजय माकन ने कहा कि आज विधानसभा में भाजपा की पहिले मासखंडवर्ष लोचनी ऐतिहासिक रूप से सरल हुई है। प्रथममंत्री नंद मोदी ने आधिकारिक रूप से सफल हुई है, निश्चय आज ही परिवर्तन का संकेतन आने हो रहा है। सासु के बाद 21 प्रत्याशियों को पहली सूची जारी कर दी है।

तालुका पाटने के मामलें में सिंहदेव को राहत

रायपुर, 30 सितम्बर (देशबन्धु)। उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव को हाइकोर्ट के फैसले पर बड़ी राहत मिली है। हालांकि सरकार द्वारा अधिकारकों के सतीनाओं में स्थित विधानसभा तालुका व मौरली बांध में सिंहदेव परिवार के स्वामित्व की भूमि को लेकर हाइकोर्ट फैसलेसुर में खालिज कर्तव्य पाठिका को कोर्ट ने खालिज कर दिया है।

सतीनाओं के विधानसभा तालुका व मौरली बांध में सिंहदेव परिवार के स्वामित्व की भूमि को लेकर हाइकोर्ट फैसलेसुर में खालिज कर्तव्य पाठिका को कोर्ट ने खालिज कर दिया है।

हाइकोर्ट ने खालिज पाठिका को कोर्ट ने खालिज कर दिया है।

हाइकोर्ट ने खालिज पाठिका को कोर्ट ने खालिज कर दिया है।

हाइकोर्ट ने खालिज पाठिका को कोर्ट ने खालिज कर दिया है।

हाइकोर्ट ने खालिज पाठिका को कोर्ट ने खालिज कर दिया है।

हाइकोर्ट ने खालिज पाठिका को कोर्ट ने खालिज कर दिया है।

हाइकोर्ट ने खालिज पाठिका को कोर्ट ने खालिज कर दिया है।

दो दिन बाद फिर छत्तीसगढ़ आएंगे प्रधानमंत्री

रायपुर, 30 सितम्बर (देशबन्धु)। आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देन चार दिवसीय छत्तीसगढ़ पर भ्रमण के दौरान मुख्यमंत्री भूपेश बघेल दो दिनों के बाद फिर छत्तीसगढ़ आएंगे।

राज्य के वार्षिक आय के आधार पर निर्धारित होगी ऋण की पाठना। इसके अतिरिक्त समलप योजना के अंतर्गत पाठना को शर्तों को स्थगित बनाया गया है। महिला हिड्यादी को ऋण लेने को पाठना परिहार को वार्षिक आय के आधार पर उसके वार्षिक वार्षिक आय के आधार पर निर्धारित होगा। पाठना वार्षिक आय वार्षिक रूप से। लाख के स्थापना पर अब नया महिला को वार्षिक आय की सीमा राशि रूप से 2 लाख रुपये तक होगी अब ऋण को पाठना होगा।

मुख्यमंत्री बघेल ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से महिला को कांच आ बहाल देती वार्षिक आय में लामाभा 100 नवीन महिला समूह प्रारंभ किया है। साथ ही 4 लाख तक का ऋण देना दिया गया है।

मुख्यमंत्री बघेल ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से महिला को कांच आ बहाल देती वार्षिक आय में लामाभा 100 नवीन महिला समूह प्रारंभ किया है। साथ ही 4 लाख तक का ऋण देना दिया गया है।

